E Learning Study Material

By Prof YADWENDRA SINGH

MAHARAJA COLLEGE ARA BIHAR

VKS UNIVERSITY ARA

BA PART 1st ECONOMICS HONS

PAPER 1st

Criticisms of MALTHUSIAN THEORY OF Population

माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की आलोचनाएं

इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए निकोलसन (Nicholson) ने बताया कि - जिस प्रकार डार्विन ने मनुष्य जाति की उत्पत्ति से सम्बन्धित प्राचीन धार्मिक विचारों को झकझोर डाला, उसी प्रकार माल्थस ने मानव जाति के अस्तित्व से सम्बन्धित धार्मिक विचारों को तोड़ डाला। माल्थस के सिद्धान्त के विरुद्ध अनेक आलोचनाएं की जाती हैं जिनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :-

1. जनसंख्या केवल खाद्य सामग्री के उत्पादन पर ही निर्भर नहीं रहती - माल्थस के अनुसार जनसंख्या का भरण पोषण केवल खाद्य सामग्री के उत्पादन पर ही निर्भर करता है लेकिन जनसंख्या का पालन केवल कृषि द्वारा ही नहीं बल्कि व्यापार, उद्योग आदि का विकास करके भी किया जा सकता है। यदि किसी देश में औद्योगिक उत्पादन अधिक होता है तो वह उसके बदले दूसरे देशों से खाद्यान्न मंगा कर अपनी जनसंख्या का भरण पोषण कर सकता है। इंगलैण्ड में वर्षों

मात्र 10–12 हफ्ते के लिए ही खाद्य सामग्री का उत्पादन होता है। वर्ष के शेष समय के लिए देश में तैयार औद्योगिक उत्पादन के बदले विदेशों से खाद्य सामग्री का आयात किया जाता है।

2. माल्थस के गणितीय सूत्र गलत हैं – कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार माल्थस के गणितीय सूत्र गलत हैं। माल्थस के अनुसार जनसंख्या ज्यामितिक रीति से तथा खाद्य सामग्री गणितीय रीति से बढ़ती है। लेकिन जनसंख्या एवं खाद्य सामग्री के सम्बन्ध में इस प्रकार का कोई निश्चित नियम नहीं होता। आधुनिक काल में वैज्ञानिक खेती के फलस्वरूप खाद्यान्न का उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है। यह भी देखने को नहीं मिलता कि किसी देश की जनसंख्या 25 वर्षों में दुगनी हो गयी हो। लेकिन कुछ लोगों का विचार है कि माल्थस की इस प्रकार की आलोचना करना उचित नहीं है क्योंकि वे अपने सूत्रों द्वारा केवल यह दिखाना चाहते थे कि खाद्य सामग्री की तुलना में जनसंख्या अधिक तेजी से बढ़ती है।

3. कृषि में हमेशा उत्पत्ति ह्रास नियम लागू नहीं होता – माल्थस का सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित है कि कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है लेकिन वैज्ञानिक आविष्कारों तथा कृषि कला में उन्नति के द्वारा कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता को रोका जा सकता है। इस प्रकार कृषि में सर्वदा यह नियम लागू नहीं होता। वर्तमान समय में वैज्ञानिक खेती, सिंचाई की बेहतर सुविधाओं तथा यंत्रों एवं रासायनिक खादों के प्रयोग ने कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि की है।